(प्रातः)क्लास 26/5/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

(ओमशान्ति)। बच्चों को यह तो मालूम है यह बाप है। इसमें डरने की कोई बात नहीं। यह कोई साधु–महात्मा नहीं है जो कोई बद्दुआ करेंगे या गुस्सा करेंगे। उन गुरुओं आदि में बहुत क्रोध ... होता है। तो उनसे मनुष्य डरते हैं। कहां सराप न दे दे। यहां तो ऐसी कोई बात ही नहीं। बाप डरते वही हैं जो बहुत ही चंचल होते हैं। तो बाप गु(स्)सा भी करते हैं। यहां तो बाप कब बच्चों आदि गु(स्)सा आदि नहीं करते हैं। समझाते हैं अगर बाप को न याद करेंगे तो विकर्म विनाश नहीं होंगे। अपन को ही जन्म–जन्मांतर के लिए नुकसान करेंगे। बाप तो समझानी देते हैं। आगे के लिए सुधर जाये। बाकी ऐसे नहीं कि बाप नाराज़ होते हैं। बाप तो समझाते रहते हैं अटेन्शन दो। एक तो बाप को याद करो और चक्र को बुद्धि में रखो। दैवी गुण धारण करो। याद है मुख्य। बाकी सृष्टि चक्र की नॉलेज तो बहुत ही सहज है। वह है सोर्स ऑफ इनकम; परन्तु उनके साथ दैवी गुण भी धारण करनी है। इस समय है बिल्कुल आसुरी गुण। तो उन्हों को समझाना पड़ता है। बच्चों में आसुरी गुण होते हैं। मारने से कोई फायदा नहीं। और ही सीखते हैं। वहां सतसंग में तो सीखना नहीं होता है। यहां तो माँ–बाप से बच्चे सभी सीखते हैं। विकार में जाना सीखते हैं। चाल सिस्टम के कमरे बहुत छोटे–2 थे। उसमें स्त्री–पुरुष और बड़े–2 बच्चे इकट्ठे रहते हैं। अभी बताओ बच्चों पर क्या असर पड़ता होगा। बाबा ग़रीबों की बात करते हैं। साहूकारों के लिए तो जैसे यहां स्वर्ग है। उनको ज्ञान की दरकार ही नहीं। यह तो पढ़ाई है। टीचर चाहिए जो शिक्षा देवे। सुधारे। तो बाप ग़रीबों की बात करते हैं। कैसी हालत है। कैसे–2 बच्चे ख़राब होते हैं। माँ–बाप सभी देखते रहते हैं। फिर छोटेपन में ही खराब हो जाते हैं। बाप की भी बच्चों पर खराब दृष्टि पड़ जाती है। तो ग़रीबों की हालत देखो कैसी है। बाबा कहते हैं मैं भी ग़रीब निवाज़ हूँ। समझाता हूँ देखो इस दुनियां में मनुष्यों की क्या हालत है। कोई गुरू से, कोई चाचे से, कोई बाप से, बच्चे बच्ची से खराब हो पड़ते हैं। बात मत पूछो। तमोप्रधान दुनियां है ना। तमोप्रधान की भी हद होती है ना। 1250 वर्ष तो लेंगे। एक दिन भी कम–जास्ती नहीं। तमोप्रधान पूरा हुआ फिर बाप को आना पड़ता है। कहते हैं मैं ड्रामा अनुसार बंधायमान ..... मुझे आना ही होता है। कितना शुरू में ग़रीब आये। साहूकार भी आये। दोनों ही इकट्ठे बैठते थे। बड़े–2 घर की बच्चियां भागीं। कुछ भी ले न आईं। कितना हंगामा हो गया। जैस कि राकस (राक्षस) आ गया। घर–2 में रोदन (हाय)2..... मच गई। (हिस्ट्री सुनाना) ड्रामा जो होने का था सो हो गया। ख़्याल भी नहीं था। ऐसे होगा। बाबा खुद वण्डर खाता था क्या हो रहा है। रात–रात को बालकनी से कूद कर आ जाते थे। किसको मालूम नहीं (पड़)ता था। वह नींद में ही सोये रहते थे। सुबह को उठे तो देखे है नहीं। रात को 12 बजे सब भाग निकलीं किसको पता नहीं पड़ा। कुम्भकरण के नींद में सोये हुये थे। इन्हों की हिस्ट्री बड़ी वण्डरफुल है। यह भी ड्रामा में नूँध है ना। बाबा ने सभी को कह दिया चिट्ठी लिखवाये करके आओ हम ज्ञानामृत पीने जाते हैं। उनके पति लोग विलायत से आये। भूखे तो होते हैं ना। वह बोले विख दो। यह कहे हमने ज्ञानामृत पिया, विख कैसे दे सकते हैं? इस पर इन्हों का एक गीत भी है। बड़े झगड़े हो गये। बड़े–2 आदमियों की रिपोर्ट निकली। मूत नहीं मिलता है। दादा ने इन सभी पर क्या जादू डाला है? उन्हों को थोड़े ही पता था कि इनमें कौन सी शक्ति है। बोले दादा यह क्या करते हो? अरे, मैं तो कुछ नहीं करता हूँ। पंचायती में बुलाया। यह क्या कर रहे हो? यह विख नहीं देती है। बाबा बोला भगवानुवाचः काम महाशत्रु है, काम को जीतने से तुम जगतजीत विश्व के मालिक बनेंगे। हम तो साफ यह बात बोलते थे। ब(ड़े) ही गु(स्)से से भरे हुये थे। हमने कहा क्रोध महाशत्रु है। अगर क्रोध करेंगे तो हम चले जावेंगे। थोड़ा देखा आवाज़ शुरू करते हैं, एकदम चला गया। कर तो कुछ नहीं सकते हैं ना। यह भी लिखा हुआ है लाखा भवन को आग लगाई। जब कुछ हंगामा होता था तो बाबा वहां होता था। बहुत करके चला जाता था। फिर घासलेट आदि ले आते थे। बहुत हल्ला करने लगे। दादा कहां है? दादा त(ो) था नहीं। धणी ही नहीं तो आग कैसे लगावेंगे? उल्टी–सुल्टी बातें कितनी बनाई हैं। दादा जेल गया, यह हुआ।

अरे, बाप और दादा दोनों ही इकट्ठे वह जेल में कैसे जा सकते? अखबारों में ऐसी–2 बाह्यात बातें लिखते थे जो बात मत पूछो। जैसे कि चर्ये लिखते थे। यहां अन्दर रोज़ एक बच्चा पैदा होता है वह फिर खड्ढे में डाल देते हैं। ऐसे बातें अखबारों में डालते थे। बाबा वण्डर खाते थे। एक बार वह खड्ढा देखो भी तो सही। तो यह है सभी वण्डरफुल बातें। अमेरिका से भी अखबार में निकला था कि भारत में एक जवाहरी पैदा हुआ है जिनको 16,108 रानियां चाहिए। उस समय हमारे सतसंग में 400 थे। तो लिखा उनको तो 400 मिल (गई) हैं.....अभी बाबा को तो कुछ भी कर नहीं सकते थे। यह कहे हमने थोड़े ही भगाया। यह तो आपे ही भागी हैं। बड़ी वण्डरफुल खेल है। इसको कहते हैं चरित्र। शास्त्रों में फिर कृष्ण के चरित्र लिख दिया है। है कुछ भी नहीं। कृष्ण की तो बात हो न सके। तो यह भी सभी ड्रामा में नूँध है। नाटक में भी यह होता है ना। हंसी–कुड़ी आदि–2। यह तो दोनों बाप कहते हैं। हमने कुछ नहीं किया। यह तो ड्रामा का खेल चल रहा है। छोटे बच्चे आ गये। कोई तो गोद में ले आईं। कोई पेट में भी ले आईं। अभी तुम कितने बड़े हो गये हो। बच्चों के नाम ले आये। फिर जो उनसे भाग गये उनका वह नाम तो है नहीं। फिर पुराना नाम शुरू हो गया; इसलिए ब्राह्मणों की माला होती नहीं। माला भक्त लोग फेरते हैं। कलयुग में मालाएं हैं। संगमयुग पर माला है नहीं। किस(के) पास भी नहीं है। कलयुग में है। सतयुग में भी माला होती नहीं। तुम्हारे पास भी कुछ नहीं है। पहले माला फेरते थे। अभी तुम हाथ भी नहीं लगाते हो। तुम तो माला के दाने बनते हो। वहां भक्ति होती नहीं। यह नॉलेज है समझने की । यह है ही सेकण्ड की नॉलेज। फिर उनको कहते ज्ञान का सागर है। सारा सागर .... बनाओ, जंगल को कलम बनाओ तो भी पूरा हो न सके। और फिर है भी सेकण्ड की बात। अल्फ को जान गये तो बे बादशाही ज़रूर मिलनी चाहिए। तो वह अवस्था जमाने वा पतित से पावन बनने मेहनत है। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझ मुझ बेहद के बाप को याद करो। इसमें है मेहनत। तदबीर कराने वाला टीचर तो है; परन्तु किसकी तकदीर में नही है तो टीचर भी क्या करे। टीचर तो पढ़ावेंगे। यह तो नहीं रिश्वत लेकर पास कर देंगे। यह तो बच्चे समझते हैं यह बाप दादा दोनों इकट्ठा है। ढेर बच्चों की चिट्ठियां आती हैं बाप दादा के नाम पर। शिवबाबा केअर ऑफ ब्रह्मा बाबा। बाप से वर्सा लेते हो इन दादा द्वारा। त्रिमूर्ति में भी है ब्रह्मा द्वारा स्थापना। ब्रह्मा को क्रियेटर नहीं कहेंगे। बेहद का क्रियेटर तो वह बाप ही है। प्रजापिता ब्रह्मा भी बेहद का हो गया ना। प्रजापिता ब्रह्मा तो बहुत प्रजा हो जावेगी। सभी कहते हैं ग्रेट–2 गैंड फादर। ब्राह्मणों का बाप है ना। चोटी है ब्राह्मण। फिर सिजरा बनता है। पहले ग्रेट–2 ग्रैंड फादर। शिवबाबा को ग्रेट–2 ग्रैंड फादर नहीं कहेंगे। वह तो सभी आत्माओं का हो गया। आत्माएं सभी भाई–2 हैं। फिर बहन–भाई होते हैं। बेहद के सिजरे का प्रजापिता ब्रह्मा हो गया। जैसे बिरा(द)री का सिजरा होता है ना। यह है बेहद का सिजरा। आदम और बीबी। एडम–ईयु(व) किसको कहते हैं? ब्रह्मा–सरस्वती को कहेंगे। अभी सिजरा तो बहुत बड़ा हो गया। झाड़ स(ा)रा जड़–जड़ीभूत हो गया है फिर नया चाहिए। इसको कहा जाता है वैरायटी धर्मों का झाड़। वैरायटी फीचर्स का सिजरा। एक न मिले दूसरे से। हरेक के एक्टिविटी का पार्ट एक न मिले दूसरे से। यह बहुत गुह्य बातें हैं। छोटे बुद्धि वाले तो समझ न सकें। बहुत ही मुश्किल है। हम आत्मा छोटी बिन्दी हैं। परमपिता परमात्मा भी बिन्दी है। यहां बाजू में आकर बैठते हैं। आत्माएं छोटी–बड़ी नहीं होती हैं। बापदादा इन दोनों का इकट्ठा पार्ट बड़ा ही वण्डरफुल है। मैं अपन को सुधारने लिए मेहनत भी करता हूँ। श्रीमत पर भी चलता हूँ। आज बाबा ने रूहानी ड्रिल भी सिखाई। नॉलेज भी सुनाई। बच्चों को सावधान भी किया गफ़लत न करो। उल्टा–सुल्टा बोलना भी नहीं , शान्ति में बाप को याद करो। अच्छा, मीठे–2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग रूहानी बच्चों को रूहानी वा का नमस्ते। नमस्ते।